

[2023] 3 एस. सी. आर. 476

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

ए.

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो v.

संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. (2023 की आपराधिक अपील संख्या 1148) अप्रैल 17, 2023

बी.

[सूर्या कान्ट और जे. के. माहेश्वरी, जे. जे.]

भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988-एस.7, 13(1), 13(2) – दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 -एस. 41 ए, 438-भारत का संविधान-अनुच्छेद 21-कर विभाग ने शिकायतकर्ता की कंपनी के खिलाफ तलाशी और जब्ती की कार्रवाई शुरू की-प्रत्यर्थी -अतिरिक्त आयकर आयुक्त शिकायतकर्ता के मामले को संभाल रहा था-प्रत्यर्थी के खिलाफ आरोप कि उसने अपने मामले में शिकायतकर्ता की मदद करने के लिए अवैध संतुष्टि की मांग की थी-शिकायतकर्ता और प्रत्यर्थी के बीच मांग की उक्त बातचीत को एक डिजिटल वॉयस रिकॉर्डर में दर्ज किया गया था-तब एक जाल बिछाया गया था-प्रत्यर्थी ने एक फर्म के खाते में राशि जमा करने के लिए कहा था-शिकायतकर्ता के कर्मचारी को ए. सी. बी. ट्रैप टीम के कर्मियों के साथ रिश्वत की राशि के साथ फर्म में भेजा गया था और रिश्वत की राशि फर्म में जमा की गई थी और इसे शिकायतकर्ता द्वारा एक कॉल पर स्वीकार किया गया था-इसके बाद 7, 13(1) और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 13 (2)-प्रत्यर्थी ने विशेष न्यायाधीश के समक्ष अग्रिम जमानत देने के लिए एक आवेदन को प्राथमिकता दी, जिसे खारिज कर दिया गया-हालाँकि, उच्च न्यायालय द्वारा इस निर्देश के साथ अनुमति दी गई थी कि अग्रिम जमानत के बावजूद, सीबीआई प्रत्यर्थी की पुलिस रिमांड के लिए आवेदन कर सकती है और पुलिस रिमांड पूरी होने पर, प्रत्यर्थी को तुरंत रिहा कर दिया जाएगा-अपील पर, अभिनिर्धारित किया गया:शिकायतकर्ता और प्रत्यर्थी के बीच बातचीत की कथित रिकॉर्डिंग जिसमें उसने फर्म के खाते में राशि जमा करने के बाद शिकायतकर्ता को धन्यवाद दिया था, प्रत्यर्थी को फर्म में अवैध संतुष्टि जमा करने के साथ जोड़ने के लिए एक उचित कड़ी है, जिससे प्रथम दृष्टया इसकी स्वीकृति दिखाई देती है-जिस तरह से प्रत्यर्थी ने अपने सहयोगियों की मदद से अपनी गिरफ्तारी से जबरन बचा लिया और सबूत प्राप्त किए।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

476

477

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर.

नष्ट, इस स्तर पर उसकी संलिप्तता का संकेत देने के लिए एक मजबूत परिस्थिति है-एक सुव्यवस्थित सिंडिकेट प्रतीत होता है जिसमें आयकर विभाग के अधिकारी और अधिकारी, व्यवसायी और हवाला व्यापारी शामिल हैं, जो एक साथ हैं-इस तरह की सांठगांठ का पता लगाने की आवश्यकता है जांच के माध्यम से-इसलिए, उच्च न्यायालय के विवादित निर्णय और आदेश को अपास्त करना दिया गया और प्रत्यर्थी की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी गई।

बी.

जमानत-अग्रिम जमानत-अग्रिम जमानत देने या अस्वीकार करने के लिए प्रासंगिक कारक-न्यायालय का न्यायिक विवेकाधिकार विभिन्न प्रासंगिक कारकों द्वारा निर्देशित होगा और काफी हद तक यह प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करेगा-न्यायालय को संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता और एक निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच की आवश्यकता के बीच एक नाजुक संतुलन बनाना चाहिए, जिसे उसके तार्किक निष्कर्ष पर ले जाना चाहिए।

सी.

भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 -एस. 17 ए-जांच की पूर्व मंजूरी-की आवश्यकता-धारा 17 ए के पहले परंतुक में कहा गया है कि अनुचित लाभ स्वीकार करने के आरोप में मौके पर ही व्यक्ति की गिरफ्तारी से जुड़े मामलों में इस तरह की मंजूरी आवश्यक नहीं है-साथ ही, जाल मामले में ऐसे अधिकारी की जांच करने के लिए पूर्व मंजूरी या मंजूरी जाल और जांच के उद्देश्य को विफल करने की संभावना है, जो कि विधायिका का अंतर्निहित इरादा नहीं है।

डी.

ई.

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 -धारा 438-जमानत रद्द करना-जमानत रद्द करना केवल ठोस और भारी कारणों से किया जाना चाहिए-यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उच्च न्यायालय निर्णयों की श्रृंखला में समय-समय पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित बुनियादी सिद्धांतों के अनुरूप विवेकपूर्ण, सावधानीपूर्वक और सख्ती से अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करे।

एफ.

अपीलों का निपटारा करते हुए, न्यायालय ने

यह अभिनिर्धारित किया कि **-1.** जिस तरह से प्रत्यर्थी संख्या **1** ने अपने सहयोगियों की मदद से जबरन अपनी गिरफ्तारी से बचा लिया और सबूतों को नष्ट कर दिया, वह इस स्तर पर उनकी संलिप्तता का संकेत देने के लिए एक मजबूत परिस्थिति है, हालांकि जांच पूरी होने पर ही एक स्पष्ट तस्वीर सामने आएगी।[पैरा **30**] **[494-एच; 495-ए]**

जी.

**2.** उच्च न्यायालय द्वारा कथित अपराध की प्रकृति और गंभीरता को ध्यान में रखा जाना चाहिए था।भ्रष्टाचार गंभीर स्थिति में है

एच.

**478** सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 3 एस. सी. आर.

ए.

हमारे समाज के लिए खतरा है और इससे सख्ती से निपटा जाना चाहिए।इससे न केवल सरकारी खजाने को भारी नुकसान होता है, बल्कि सुशासन को भी कुचला जाता है।आम आदमी समाज कल्याण योजनाओं के तहत मिलने वाले लाभों से वंचित है और सबसे ज्यादा प्रभावित है।[पैरा **31**] **[495-बी-सी]**

**3.** अभिलेख पर रखी गई सामग्री से, ऐसा लगता है कि प्रथम दृष्टया, प्रत्यर्थी संख्या **1** के खिलाफ आरोपों को इस स्तर पर हल्के में नहीं लिया जा सकता है।ऐसा प्रतीत होता है कि एक सुव्यवस्थित सिंडिकेट है जिसमें आयकर विभाग के अधिकारी और अधिकारी, व्यवसायी और हवाला व्यापारी शामिल हैं, जो मिलकर काम कर रहे हैं।इस तरह की सांठगांठ का पता एक अप्रभावित और निर्बाध जांच के माध्यम से लगाया जाना चाहिए।[पैरा **32**] **[495-सी-डी]**

बी.

सी.

**3.** धारा **17** ए केवल इस बात पर विचार करती है कि पुलिस अधिकारी किसी लोक सेवक द्वारा किए गए किसी भी अपराध की कोई जांच, जांच या जांच नहीं करेंगे, जहां कथित अपराध सक्षम प्राधिकारी की पूर्व मंजूरी के बिना आधिकारिक कार्यों या कर्तव्यों के निर्वहन में की गई किसी भी सिफारिश या निर्णय से संबंधित है।धारा के पहले परंतुक में कहा गया है कि अनुचित

लाभ स्वीकार करने के आरोप में मौके पर ही व्यक्ति की गिरफ्तारी से जुड़े मामलों में इस तरह की मंजूरी आवश्यक नहीं है। जैसा कि देखा जा सकता है, धारा **17** ए का पहला परंतुक उन मामलों को संदर्भित करता है जिनमें एक लोक सेवक पर अनुचित लाभ या उसके प्रयास की स्वीकृति का आरोप लगाया जाता है। ट्रैप मामले में ऐसे अधिकारी की जांच के लिए पूर्व अनुमोदन या मंजूरी से ट्रैप और जांच के उद्देश्य को विफल करने की संभावना है, जो कि विधायिका का अंतर्निहित इरादा नहीं है। प्रत्यर्थी संख्या **1** के खिलाफ जांच, रिश्त मांगने का आरोपी होने के कारण, केंद्र सरकार की किसी पूर्व मंजूरी की आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा, प्रत्यर्थी संख्या **1** के खिलाफ आरोप उसके द्वारा अपनी अर्ध-न्यायिक या प्रशासनिक क्षमता में की गई किसी भी सिफारिश या निर्णय के इर्द-गिर्द नहीं घूमता है। [पारस **33,34**]  
**[495-ई-एच]**

डी.

ई.

एफ.

जी.

**4.** यह सच है कि जमानत रद्द करना केवल ठोस और भारी कारणों से किया जाना चाहिए। फिर भी, जमानत देने वाले अनुचित आदेश को दरकिनार करना जमानत रद्द करने से अलग है। यह न्यायालय हमेशा न्यायिक ए में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

एच.

479

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर.

अभियुक्त को जमानत देते समय उच्च न्यायालय द्वारा विवेकाधिकार का प्रयोग किया गया। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उच्च न्यायालय समय-समय पर निर्णयों की एक श्रृंखला में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित बुनियादी सिद्धांतों के अनुरूप विवेकपूर्ण, सावधानीपूर्वक और सख्ती से अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करे। [पैरा **35**] **[496-ए-बी]**

सुशीला अग्रवाल बनाम राज्य (दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) **(2020) 5 एस. सी. सी.**

बी.

**1 : [2020] 2 एस. सी. आर. 1-अनुसरण किया गया।**

सिद्धराम सतलिंगप्पा मेत्रे बनाम महाराष्ट्र राज्य

**(2011) 1 एससीसी 694: [2010] 15 एस. सी. आर. 201; गुरबख्श**

सिंह सिबिया बनाम पंजाब राज्य **(1980) 2 एस. सी. सी. 565:**

**[1980] 3 एस. सी. आर. 383-निर्भर।**

सी.

राज्य प्रतिनिधि द्वारा सीबीआई बनाम अनिल शर्मा **(1997) 7 एससीसी**

**187 :[1997] 3 पूरक।एस. सी. आर. 737; प्रेम शंकर प्रसाद बनाम बिहार राज्य (2021)**  
एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 955; राज्य

मध्य प्रदेश बनाम प्रदीप शर्मा **(2014) 2 एससीसी 171:[2013] 12 एससीआर**  
**772; लवेश बनाम राज्य (दिल्ली का एन. सी. टी.)**

डी.

**(2012) 8 एससीसी 730:[2012] 7 एससीआर 469; अर्नेश कुमार बनाम बिहार राज्य**  
**(2014) 8 एससीसी 273:[2014] 8 एससीआर 128**

दौलत राम बनाम हरियाणा राज्य **(1995) 1 एस. सी. सी. 349:**

**[1994] 5 पूरक।एस. सी. आर. 278-संदर्भित।संदर्भित निर्णय**

ई.

**[1997] 3 पूरक।एस. सी. आर. 737 पैरा 19 [2013] 12 एस. सी. आर. 772**  
**पैरा 19 [2012] 7 एस. सी. आर. 469**

संदर्भित किया गया है

पैरा **19**

**[2014] 8 एससीआर 128**

संदर्भित किया गया है

पैरा **21**

एफ.

**[1994] 5 पूरक।पैरा 21 [2010] 15 एस. सी. आर. 201 को संदर्भित एस. सी.**  
**आर. 278 पर भरोसा किया गया**

पैरा **22**

**[1980] 3 एससीआर 383**

पर भरोसा किया गया |

पैरा 22

जी.

**[2020] 2 एससीआर 1**

पीछा किया।

पैरा 23

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2023 की आपराधिक अपील संख्या 1148।

2022 के सी. आर. एल. एम. ए. सं. 20871 में अहमदाबाद में गुजरात उच्च न्यायालय के दिनांक 19.12.2022 के निर्णय और आदेश से।

एच.

480

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

**[2023] 3 एस सी आर।**

ए.

सह

2023 की आपराधिक अपील संख्या 1149।

तुषार मेहता, एस. जी., मनिंदर सिंह, सीनियर अधिवक्तागण , रजत नायर, अमित शर्मा बी., ए. के. कौल, माधव सिंहल, प्रत्यूष श्रीवास्तव, आनंद वेंकटरमानी, श्रीमती विजयलक्ष्मी वेंकटरमानी, विनायक मेहरोत्रा, सिद्धार्थ धर्माधिकारी, अभिकल्प प्रताप सिंह, प्रभास बजाज, सुश्री श्रेया सक्सेना, सुश्री मानसी सूद, चितवन सिंघल, सुश्री सोनाली जैन, अभिषेक कुमार पांडे, रमन यादव, अरविंद कुमार शर्मा, अधिवक्तागण अपीलार्थी के लिए।

बी.

मुकुल रोहतगी, नरेंद्र हुड्डा, श्याम दीवान, वरिष्ठ अधिवक्तागण , सुश्री दीक्षा राय, भद्रिश एस. राजू, आलोक सांगवान, सुमित कुमार शर्मा, शौर्य लांबा, उदय आदित्य बनर्जी, अंकित अग्रवाल, प्रतीक धनखड़, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

सी.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

सूर्या कान्ट, जे।

डी.

1. छुट्टी दे दी गई।

2. दो आपराधिक अपीलों में अपीलार्थियों, क्रमशः केंद्रीय जांच ब्यूरो और रुपेश बलवंतभाई ब्रह्मभट्ट (इसके बाद, "शिकायतकर्ता"), अहमदाबाद में गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा पारित 19 दिसंबर, 2022 के आदेश से व्यथित हैं, जिसमें सी. आर. नं. 1 के रूप में दर्ज प्राथमिकी के संबंध में प्रत्यर्थी नं. 1 द्वारा दायर अग्रिम जमानत याचिका को अनुमति दी गई है। 2018 में संशोधित भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 7 के तहत अपराध के लिए सी. बी. आई./ए. सी. बी./गांधीनगर पुलिस स्टेशन, जिला गांधीनगर के समक्ष 2022 का आर. सी. 0292022 ए 0011।

ई.

एफ.

पृष्ठभूमि

3. शिकायतकर्ता एक व्यवसायी है जो निर्माण व्यवसाय में लगा हुआ है जो इस नाम से जाता है: सफल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड फरवरी 2019 में, अहमदाबाद में आयकर के अतिरिक्त आयुक्त के रूप में तैनात एक आई. आर. एस. अधिकारी, प्रत्यर्थी संख्या 1 ने सफल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 133 ए के तहत वित्तीय वर्ष के लिए एक सर्वेक्षण किया। 50 करोड़।

जी.

एच.

481

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

ए.

4. इसके बाद, सितंबर 2021 में, आयकर विभाग, अहमदाबाद की जांच शाखा द्वारा सफल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ तलाशी और जब्ती की कार्रवाई शुरू की गई। इन तलाशी के बाद, शिकायतकर्ता के व्यवसाय से संबंधित कुछ कागजात जब्त कर लिए गए और सेंट्रल सर्कल, रेंज-1 डिवीजन ने मांग नोटिस जारी करने की प्रक्रिया शुरू कर दी। यह शिकायतकर्ता का मामला है कि उसे पता चला कि प्रत्यर्थी संख्या 1 अपना मामला संभाल रहा था और मूल्यांकन ज्ञापन तैयार करेगा। इसके बाद, शिकायतकर्ता और प्रत्यर्थी संख्या 1 मामले के संबंध में अक्सर मिलते थे और यह आरोप लगाया जाता है कि इन बातचीत के दौरान, प्रत्यर्थी संख्या 1 ने शिकायतकर्ता के व्यवसाय को बर्बाद करने की धमकी दी और अवैध संतुष्टि की मांग की।

बी.

सी.

5. 29 सितंबर, 2022 को प्रत्यर्थी नंबर 1 ने कथित तौर पर शिकायतकर्ता से संपर्क किया और उसे 3 अक्टूबर, 2022 को उससे मिलने के लिए कहा। तदनुसार, शिकायतकर्ता आयकर कार्यालय में प्रत्यर्थी संख्या 1 से मिला जहां प्रत्यर्थी संख्या 1 ने रुपये की अवैध संतुष्टि की मांग की। शिकायतकर्ता को उसके मामले में मदद करने के लिए 30 लाख। यह बातचीत शिकायतकर्ता द्वारा डिजिटल वॉयस रिकॉर्डर पर रिकॉर्ड की गई थी जिसे जांच अधिकारियों को सौंप दिया गया है और इसका एक प्रतिलेख भी इस न्यायालय को प्रदान किया गया है। शिकायतकर्ता को धारा अंगडिया फर्म में एक वर्धमान के खाते में राशि जमा करने का निर्देश दिया गया था।

डी.

6. शिकायतकर्ता ने अगली सुबह ए. सी. बी. पुलिस स्टेशन, अहमदाबाद शहर में 07 बजे शिकायत दर्ज कराई: 15 फिर घंटे और एक जाल बिछाया गया। शिकायतकर्ता के कर्मचारी को रुपये की रिश्वत राशि के साथ अंगडिया फर्म भेजा गया था। ए. सी. बी. ट्रैप टीम के कर्मियों के साथ 30 लाख। रुपये जमा करने पर। धारा अंगडिया फर्म के साथ 30 लाख रुपये, शिकायतकर्ता ने प्रत्यर्थी नंबर 1 से वॉट्सऐप कॉल के माध्यम से संपर्क किया जो ए. सी. बी. टीम द्वारा रिकॉर्ड किया गया था जिसमें प्रत्यर्थी नंबर 1 ने राशि के भुगतान को स्वीकार किया। इसके तुरंत बाद, ए. सी. बी. की एक टीम प्रत्यर्थी नंबर 1 को हिरासत में लेने और गिरफ्तार करने के लिए गई, जिस पर कुछ कर्मचारियों के साथ ए. सी. बी. की टीम पर शारीरिक हमला करने और आगामी अराजकता के कारण कार्यालय से भागने का आरोप है। यह भी दावा किया जाता है कि प्रत्यर्थी नंबर 1 ने कार्यालय से भागते समय अपना मोबाइल फोन एक सहकर्मी को सौंप दिया। इसके साथ ही, ए. सी. बी. की एक अन्य टीम ने धारा अंगडिया के पास जमा की गई रिश्वत की राशि बरामद की।

ई.

एफ.

जी.

7. इस प्रकार, प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 7, 13 (1) और 13 (2) के तहत 4 अक्टूबर, 2022 को प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

एच.

482

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

8. मामले की गंभीरता को देखते हुए, 12 अक्टूबर, 2022 को मामले को केंद्रीय जांच ब्यूरो (इसके बाद, "सीबीआई") को स्थानांतरित कर दिया गया और प्राथमिकी संख्या 12/2022 को सी. आर. नं. के रूप में फिर से दर्ज किया गया। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 7 के तहत 2022 का आर. सी. 0292022 ए 0011। एफ. आई. आर. में दर्ज किया गया है कि प्रत्यर्थी संख्या 1 ए. सी. बी. दल द्वारा गिरफ्तारी से बच गया था और एफ. आई. आर. के पुनः पंजीकरण के समय भी फरार था।

बी.

9. इसके बाद, धारा 41 ए, दंड प्रक्रिया संहिता (इसके बाद, "सी. आर. पी. सी".) के तहत प्रत्यर्थी संख्या 1 को एक नोटिस जारी किया गया था जिसमें उसे सी. बी. आई. के समक्ष उपस्थित होने के लिए कहा गया था, लेकिन प्रत्यर्थी संख्या 1 जवाब देने में विफल रहा। 17 अक्टूबर, 2022 को प्रत्यर्थी संख्या 1 ने जांच अधिकारी को एक पत्र लिखा कि वह अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों के कारण गंभीर चिंता और अवसाद का सामना कर रहे थे और इस प्रकार, चिकित्सा उपचार के लिए अपने गृह राज्य राजस्थान गए थे। उन्होंने जांच में शामिल होने के लिए चार दिन का समय मांगा।

सी.

10. जांच के दौरान धारा अंगडिया फर्म के मालिक स्मित ठक्कर ने अधिकारियों को सूचित किया कि अवैध रूप से रिश्तत मालव अजीतभाई मेहता के खाते में जमा की गई थी। यह भी दावा किया जाता है कि राशि जमा करने से पहले, मालव मेहता ने स्मित ठक्कर को सूचित किया कि रु। 30 लाख रुपये खाते में जमा किए जाएंगे और उसी दिन किसी अन्य व्यक्ति को हस्तांतरित करने होंगे।

डी.

ई.

11. धारा 41 ए के तहत प्रत्यर्थी नंबर 1 को एक और नोटिस जारी किया गया था और वह फिर से सीबीआई के सामने पेश होने में विफल रहा। 26 अक्टूबर, 2022 को प्रत्यर्थी संख्या 1 ने ब्लू हेवन होटल, जयपुर के ईमेल आईडी से भेजे गए एक संचार के माध्यम से जांच अधिकारी के सामने पेश होने के लिए फिर से एक सप्ताह का समय मांगा। इसके बाद, प्रत्यर्थी संख्या 1 को कुछ और धारा 41 ए नोटिस जारी किए गए, जिस पर उन्होंने विभिन्न आधारों पर जांच में शामिल होने के लिए और समय मांगा। उन्होंने साथ ही अग्रिम जमानत देने के लिए एक आवेदन को प्राथमिकता दी।

एफ.

12. 3 नवंबर, 2022 के एक आदेश द्वारा, अहमदाबाद में सिटी सिविल एंड सेशन न्यायालय ने अग्रिम जमानत के लिए प्रत्यर्थी नंबर 1 के आवेदन को खारिज कर दिया। विशेष न्यायाधीश-सी. बी. आई. न्यायालय संख्या 3 ने कहा कि प्रत्यर्थी संख्या 1 जांच एजेंसी के साथ सहयोग करने के बजाय फरार हो गया था और कानून की प्रक्रिया से बचने के लिए खुद को राजस्थान के एक अस्पताल में भर्ती कराया था। विशेष न्यायाधीश, सी. बी. आई. न्यायालय द्वारा की गई कुछ टिप्पणियां निम्नलिखित प्रभाव वाली हैं:

जी.

एच.

483

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

ए.

“इस प्रकार, आवेदक के लिए विद्वान अधिवक्ता द्वारा अनुरोध किए गए खराब स्वास्थ्य का आधार कोई आधार नहीं होगा क्योंकि इस न्यायालय की स्पष्ट राय है कि आवेदक जांच एजेंसी के साथ सहयोग करने के बजाय फरार हो गया था और उसने कानून की प्रक्रिया से बचने के लिए खुद को राजस्थान में अपने मूल स्थान के अस्पताल में भर्ती कराया था।

बी.

... ..

उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इस न्यायालय की स्पष्ट राय है कि बड़ी साजिश का पता लगाने के लिए वर्तमान आवेदक की हिरासत में पूछताछ आवश्यक है। यह आवश्यक है कि आवेदक द्वारा बड़े षड्यंत्र को अंजाम देने में अपनाई गई कार्यप्रणाली का खुलासा किया जाए और पूछताछ के बिना, प्रासंगिक साक्ष्य एकत्र करना असंभव होगा जिसके परिणामस्वरूप अधूरी जांच होगी। यह भी स्पष्ट है कि गिरफ्तारी से बचने के लिए आवेदक ने वर्तमान आवेदन दायर किया है और इसलिए, जांच में सहयोग करने के बजाय इसे विफल करने की कोशिश की है और इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि आवेदक जांच में सहयोग नहीं कर रहा है।

सी.

डी.

... ..

यह न्यायालय इस तथ्य को भी नजरअंदाज नहीं कर सकता है कि मामले में जांच अभी भी प्रगति पर है और इस समय से पहले आवेदक को रिहा करने से आवेदक के लिए जांच को प्रभावित करने, गवाहों को बाधित करने और सबूतों के साथ छेड़छाड़ करने का मार्ग प्रशस्त

होगा।”13. न्यायालय ने अंततः अभिनिर्धारित किया कि मामले की जड़ तक पहुँचने के लिए प्रत्यर्थी संख्या 1 की अभिरक्षा में पूछताछ आवश्यक थी।14. विशेष न्यायाधीश, सी. बी. आई. न्यायालय के आदेश से व्यथित, प्रत्यर्थी संख्या 1 ने गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष अग्रिम जमानत के लिए आवेदन किया। इस बीच, 22 नवंबर, 2022 को विशेष सीबीआई न्यायाधीश की न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया।

ई.

एफ.

15. उच्च न्यायालय ने 19 दिसंबर, 2022 के विवादित आदेश के माध्यम से प्रत्यर्थी संख्या 1 को अग्रिम जमानत दे दी। उच्च न्यायालय ने कहा कि अवैध संतुष्टि की स्वीकृति के बारे में संदेह है, क्योंकि यह धारा अंगडिया फर्म में वर्धमान के खाते में जमा किया गया था और प्रत्यर्थी संख्या 1 द्वारा राशि की स्वीकृति के संबंध में कोई सबूत नहीं है। जिन कारणों के आधार पर उच्च न्यायालय अग्रिम जमानत देने के लिए आगे बढ़ा, वे उसके आदेश के पैराग्राफ 12 में दर्ज हैं, जिसमें निम्नानुसार कहा गया है:

जी.

एच.

484

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

“12. इस न्यायालय ने निम्नलिखित पहलुओं पर विचार किया है; (i) उस अपराध के लिए 12.10.2022 पर प्राथमिकी दर्ज की गई है जो कथित रूप से 04.10.2022 पर हुआ है।

(ii) आई. ओ. के निर्देशों के तहत विद्वान गया ऐप आवेदक के खिलाफ किसी भी विशेष परिस्थिति को रिकॉर्ड पर लाने में असमर्थ है। ((ग) आवेदक-अभियुक्त की भूमिका;

बी.

((iv) कि आवेदक एक अतिरिक्त आयकर आयुक्त है और उसके खिलाफ कोई अन्य आपराधिक पृष्ठभूमि नहीं है;

(v) राशि की मांग और स्वीकृति के बारे में गंभीर संदेह पैदा हो रहा है;

सी.

(vi) आवेदक से कोई खोज या वसूली नहीं हुई है। 16. उच्च न्यायालय ने आगे निर्देश दिया कि अग्रिम जमानत देने के बावजूद, सी. बी. आई. प्रत्यर्थी संख्या 1 की पुलिस रिमांड के लिए आवेदन कर सकती है और यदि यह सक्षम मजिस्ट्रेट द्वारा दी गई थी, तो प्रत्यर्थी संख्या 1 को पुलिस रिमांड पूरा होने पर तुरंत रिहा कर दिया जाएगा। इस आशय के आक्षेपित आदेश का प्रासंगिक भाग इस प्रकार है:

डी.

“16. इस आदेश के बावजूद, जांच एजेंसी के लिए यह खुला रहेगा कि वह आवेदक की पुलिस रिमांड के लिए सक्षम मजिस्ट्रेट के पास आवेदन करे। आवेदक ऐसे आवेदन की सुनवाई की पहली तारीख को और बाद के सभी अवसरों पर, जैसा कि विद्वान मजिस्ट्रेट द्वारा निर्देशित विद्वान जाए, विद्वान मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित रहेगा। पुलिस रिमांड के लिए अभियोजन पक्ष के आवेदन पर विचार करने के उद्देश्य से न्यायिक हिरासत में आरोपी के साथ व्यवहार करने के लिए यह पर्याप्त होगा। हालाँकि, यह अभियुक्त के रिमांड के आदेश के खिलाफ रोक लगाने के अधिकार के प्रति पूर्वाग्रह के बिना है, यदि, अंततः, प्रदान विद्वान जाता है और विद्वान मजिस्ट्रेट की शक्ति कानून के अनुसार ऐसे अनुरोध पर विचार करने के लिए है। यह स्पष्ट किया जाता है कि पुलिस रिमांड की ऐसी अवधि पूरी होने पर आवेदक को पुलिस हिरासत में भेजे जाने पर भी, इस अग्रिम जमानत आदेश की अन्य शर्तों के अधीन, तुरंत रिहा कर दिया जाएगा। मुकदमे में, विचारण न्यायालय जमानत पर आवेदक का विस्तार करते समय इस न्यायालय द्वारा की गई प्रथम दृष्टया टिप्पणियों से प्रभावित नहीं होगी। नियम को निरपेक्ष बना दिया जाता है। सीधी सेवा की अनुमति है।”

ई.

एफ.

जी.

एच.

485

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

ए.

17. उच्च न्यायालय के निर्देशों का पालन करते हुए, प्रत्यर्थी नंबर 1 जांच में शामिल हुआ और तीन दिनों में पेश हुआ, लेकिन कहा जाता है कि उसने अपना मोबाइल फोन (ओं) पेश नहीं किया, हालांकि उसे बार-बार ऐसा करने के लिए कहा गया था। तब सी. बी. आई. ने प्रत्यर्थी संख्या 1 की पुलिस रिमांड के लिए आवेदन किया और 30 दिसंबर, 2022 को विशेष न्यायाधीश, सी. बी. आई. न्यायालय संख्या 3 ने उक्त आवेदन को आंशिक रूप से स्वीकार कर लिया। न्यायालय ने केस डायरी के अवलोकन पर कहा कि प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ आरोप

पूरी तरह से निराधार प्रतीत होते हैं और सबूतों के लापता लिंक को एकत्र करने और बड़ी साजिश का पता लगाने के लिए जांच के उद्देश्य से रिमांड आवश्यक है। आवेदन को निम्नलिखित शर्तों में अनुमति दी गई थी:

बी.

“अभियुक्त श्री संतोष कुमार कर्णानी को आर. सी.-0292022 ए 0011 जी. एन. आर. के संबंध में दिनांक <आई. डी. 2022,01/01/2023,02/01/2023 और 03/01/2023 पर सुबह <आई. डी. 1 से शाम 7 बजे तक जांच अधिकारी, सी. बी. आई./ए. सी. बी./गांधीनगर की हिरासत में पेश होने और आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया जाता है। यह भी निर्देश दिया जाता है कि अभियुक्तों को संबंधित तिथियों पर शाम 7 बजे रिहा कर दिया जाएगा।

सी.

डी.

इसके अलावा, माननीय गुजरात उच्च न्यायालय के निर्देश के अनुसार, रिमांड की उपरोक्त अवधि पूरी होने पर, आरोपी को रिमांड अवधि समाप्त होने पर रिहा कर दिया जाए और चिकित्सा परीक्षा पत्र/प्रमाण पत्र की प्रतियों के साथ इस न्यायालय में रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। केस डायरी को जाँच अधिकारी को वापस सौंप दिया जाए।

ई.

अभियुक्त को इस मामले की उचित जाँच करने के लिए जाँच अधिकारी को पूरा सहयोग देने का निर्देश दिया जाता है। जाँच अधिकारी को भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करने का निर्देश दिया जाता है।

एफ.

डी. के. बसु बनाम के मामले में ए. आई. आर. **1997** में रिपोर्ट की गई डब्ल्यू. बी. की स्थिति

एस. सी. 610 और माननीय गुजरात उच्च न्यायालय, जबकि अभियुक्त हिरासत में है और हिरासत में किसी भी दुर्व्यवहार या यातना से बचता है।

18. इसके बाद सी. बी. आई. ने विशेष सी. बी. आई. अदालत के समक्ष उपरोक्त आदेश के निलंबन के लिए इस आधार पर एक आवेदन दायर किया कि वे इसे गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती देना चाहते हैं। इसलिए, विशेष न्यायाधीश, सी. बी. आई. न्यायालय संख्या 3 ने 7 जनवरी, 2023 तक अपने आदेश के अमल पर रोक लगा दी। बाद में न्यायालय ने इसे विशेष अनुमति याचिका (सी. आर. एल.) के अंतिम निपटारे तक बढ़ा दिया। 2023 का सं. 295।

जी.

एच.

## प्रस्तुतियाँ

19. प्रत्यर्थी नं. 1 को अग्रिम जमानत देने वाले विवादित आदेश पर जोर देते हुए, सी. बी. आई. की ओर से भारत के विद्वान सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता ने निम्नलिखित दलीलें दीं:

आई. अपराध की गंभीरता और गंभीरता और प्रत्यर्थी संख्या 1 द्वारा धारण की गई स्थिति को ध्यान में रखते हुए, उच्च न्यायालय ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के तहत अपने विवेकाधीन अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने में गलती की;

बी.

ii. उच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ एकत्र की गई सामग्री की सराहना नहीं की, जो रुपये की राशि की मांग करने वाली उसकी ध्वनि रिकॉर्डिंग को देखते हुए उसके द्वारा रिश्त की स्पष्ट मांग और स्वीकृति को स्थापित करता है। शिकायतकर्ता से 30 लाख और उसके भुगतान को स्वीकार करते हुए। प्रासंगिक आवाज रिकॉर्डिंग का विश्लेषण किया गया है और आवाजों की पहचान प्रत्यर्थी संख्या 1 और शिकायतकर्ता की आवाजों के रूप में की गई है।

सी.

डी.

iii. उच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी करते हुए घोर गलती की कि 12 अक्टूबर, 2022 को लंबे विलंब के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई थी। उस दिन, सी. बी. आई. ने केवल एफ. आई. आर. संख्या 12/2022 को फिर से दर्ज किया था जिसे शुरू में ए. सी. बी. पुलिस स्टेशन द्वारा 4 अक्टूबर, 2022 को दर्ज किया गया था।

ई.

iv. वर्ष 2015 के लिए आयकर विभाग के समूह ए अधिकारियों के संबंध में प्रत्यर्थी संख्या 1 का नाम 'सहमत सूची' में शामिल किया गया था और इस प्रकार, उनका सेवा रिकॉर्ड साफ नहीं है।

v. प्रत्यर्थी नंबर 1 गिरफ्तारी से बच गया जब ए. सी. बी. की टीम ने उसके कार्यालय पर छापा मारा जब उसने एक वॉट्सएप कॉल पर रिश्त के पैसे का भुगतान स्वीकार किया था। प्रत्यर्थी संख्या 1 और उनके सहयोगियों ने ए. सी. बी. दल को गिरफ्तारी करने और साक्ष्य एकत्र करने से रोकने के लिए आपराधिक बल का इस्तेमाल किया। ऐसा करते समय, प्रत्यर्थी नंबर 1 ने अपना मोबाइल फोन, जो सबूत का एक महत्वपूर्ण टुकड़ा है, अपने सहयोगी को सौंप

दिया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसे जांच एजेंसी द्वारा जब्त नहीं किया गया था। यह कार्यालय के सीसीटीवी कैमरों में रिकॉर्ड हो गया है।

एफ.

जी.

**vi.** ऑडियो रिकॉर्डिंग और वीडियो फुटेज की जांच फॉरेंसिक विज्ञान निदेशालय, गुजरात द्वारा ए को प्रमाणित करते हुए की गई है।

एच.

487

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

उनकी ईमानदारी। रिपोर्ट का निष्कर्ष है कि इसमें परिवर्तन के कोई संकेत नहीं हैं;

**vii.** प्रत्यर्थी संख्या 1 ने झूठा अनुरोध किया कि उसने सक्षम प्राधिकारी से आकस्मिक छुट्टी ले ली है और ब्लू हेवन होटल, जयपुर के ईमेल आईडी के माध्यम से सीआरपीसी की धारा 41 ए के तहत जारी नोटिस का जवाब भेजकर जांच एजेंसी को गुमराह किया है। जांच करने पर यह पाया गया कि प्रत्यर्थी संख्या 1 उस होटल में कभी नहीं रुका था।

बी.

**viii.** जांच के दौरान, यह दिखाने के लिए विश्वसनीय साक्ष्य सामने आए हैं कि अन्य आयकर अधिकारियों ने प्रत्यर्थी संख्या 1 के साथ हाथ मिलाया था, जो 4 अक्टूबर, 2022 को ए. सी. बी. द्वारा गिरफ्तारी से बचने के लिए प्रत्यर्थी संख्या 1 की मदद करने में कुछ अधिकारियों द्वारा निभाई गई सक्रिय भूमिका से भी स्पष्ट है। गहन साजिश का पता लगाने और अन्य आयकर अधिकारियों की संलिप्तता की जांच करने के लिए हिरासत में पूछताछ अत्यधिक आवश्यक है।

सी.

डी.

**ix.** प्रत्यर्थी संख्या 1 उच्च न्यायालय द्वारा दी गई सुरक्षा के बाद सी. बी. आई. के समक्ष पेश हुआ, लेकिन उसने अपने मोबाइल हैंडसेट नहीं सौंपे, जो सबूत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इस प्रकार वह जांच में सहयोग नहीं कर रहा है। जांच को उसके तार्किक निष्कर्ष पर ले जाने के लिए इस मामले में हिरासत में पूछताछ आवश्यक है।

ई.

**x.** रिलायंस को इस न्यायालय के फैसले पर रखा गया है

राज्य प्रतिनिधि द्वारा सी. बी. आई. बनाम अनिल शर्मा **1** का तर्क है कि

“हिरासत में पूछताछ एक संदिग्ध से पूछताछ करने की तुलना में गुणात्मक रूप से अधिक निष्कर्ष-उन्मुख है जो संहिता की धारा 438 के तहत एक अनुकूल आदेश के साथ अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इस तरह के मामले में, एक संदिग्ध व्यक्ति से प्रभावी पूछताछ कई उपयोगी जानकारी और उन सामग्रियों को अलग करने में बहुत फायदेमंद होती है जिन्हें छुपाया गया होता। इस तरह की पूछताछ में सफलता तब नहीं मिलेगी जब संदिग्ध व्यक्ति को पता हो कि पूछताछ के दौरान वह गिरफ्तारी-पूर्व जमानत आदेश द्वारा अच्छी तरह से संरक्षित और सुरक्षित है। अक्सर ऐसी स्थिति में पूछताछ केवल एक अनुष्ठान तक सीमित हो जाती है।”;

एफ.

जी.

1 (1997) 7 एससीसी 187।

एच.

488

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

**xi.** प्रेम के फैसलों पर भी रिलायंस को रखा गया है।

शंकर प्रसाद बनाम बिहार राज्य **2**, मध्य प्रदेश राज्य बनाम प्रदीप शर्मा **3** और लवेश बनाम राज्य (एनसीटी)

दिल्ली का) **4** यह आग्रह करना कि भगोड़े को अग्रिम जमानत नहीं दी जानी चाहिए;

**xii.** उच्च न्यायालय ने एक असामान्य आदेश पारित कर निर्देश दिया कि जांच एजेंसी प्रत्यर्थी संख्या 1 की पुलिस रिमांड के लिए सक्षम मजिस्ट्रेट के पास आवेदन करने के लिए स्वतंत्र होगी और उसी सांस में, मुख्य संदिग्ध की हिरासत में पूछताछ को रोक दिया।

बी.

20. सी. बी. आई. की ओर से उपरोक्त दलीलों का समर्थन करते विद्वान , शिकायतकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील श्री मनिंदर सिंह ने निम्नलिखित परिवर्धन किए:

सी.

आई. उच्च न्यायालय ने अग्रिम जमानत के लिए प्रत्यर्थी संख्या 1 के आवेदन को खारिज करते हुए दर्ज किए गए विद्वान सत्र न्यायालय की टिप्पणियों और निष्कर्षों को नजरअंदाज कर दिया।

उक्त न्यायालय ने मामले के कागजात सहित रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री का अध्ययन किया था और तब केवल यह पाया था कि हिरासत में पूछताछ आवश्यक है ताकि जांच एजेंसी मामले के मूल तक पहुंच सके।

डी.

ii. उच्च न्यायालय रुपये की स्पष्ट मांग की सराहना करने में विफल रहा। प्रत्यर्थी संख्या 1 द्वारा बनाए गए 30 लाख, जिसे शिकायतकर्ता द्वारा डिजिटल वॉयस रिकॉर्डर पर दर्ज किया गया था और उस रिश्ते के पैसे को धारा अंगडिया फर्म के माध्यम से स्वीकार किया गया था।

ई.

21. दूसरी ओर, श्री मुकुल रोहतगी और श्री श्याम दीवान, विद्वान वरिष्ठ वकीलों ने प्रत्यर्थी नंबर 1 के खिलाफ किए गए आक्षेपों का दृढ़ता से खंडन विद्वान और निम्नलिखित प्रस्तुतियों के साथ गिरफ्तारी से पहले जमानत देने वाले उच्च न्यायालय के आदेश का बचाव विद्वान :

एफ.

आई. प्रत्यर्थी नंबर 1 के खिलाफ लगाए गए आरोप झूठे और मनगढ़ंत हैं। प्रत्यर्थी संख्या 1 ने कभी भी शिकायतकर्ता के आरोप के अनुसार संतुष्टि की कोई मांग नहीं की। प्रत्यर्थी नंबर 1 का तलाशी और जब्ती की कार्रवाई से कोई संबंध नहीं था

जी.

2 2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 955। 3 (2014) 2 एससीसी 171।

4 (2012) 8 एससीसी 730।

एच.

489

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

ए.

शिकायतकर्ता की कंपनी के खिलाफ सितंबर 2021 में या मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने के साथ लिया गया। प्रत्यर्थी संख्या 1 शिकायतकर्ता के मामले का आकलन अधिकारी नहीं है और मामला किसी अन्य अधिकारी को सौंपा गया है। iii. रिश्ते की मांग या स्वीकृति का कोई सबूत नहीं है जो अपराध को स्थापित करने के लिए अनिवार्य है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 7 के तहत जाल मामलों में, शिकायतकर्ता द्वारा स्वतंत्र पंचों की उपस्थिति में मांग की बातचीत दर्ज की जानी है और जाल बिछाने वाले अधिकारी को यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी छेड़छाड़ की कोई संभावना न हो। वर्तमान मामले में, कथित मांग की ध्वनि रिकॉर्डिंग बिना किसी पुलिस की भागीदारी के की गई है और इस प्रकार, इसका कोई साक्ष्य मूल्य नहीं है। राशि का

कथित जमा एक अंगडिया फर्म में किया गया था जो प्रत्यर्थी संख्या 1 के लिए अज्ञात है और इसे रिश्त की स्वीकृति नहीं कहा जा सकता है। प्रत्यर्थी संख्या 1 का मालव अजीतभाई मेहता के साथ कोई संबंध नहीं है, जिसे उस खाते का मालिक बताया गया है जिसमें राशि जमा की गई थी और प्रत्यर्थी संख्या 1 अंगडिया फर्म के स्थल पर मौजूद नहीं था;

बी.

सी.

डी.

iii. शिकायतकर्ता की अपनी कंपनी के खिलाफ वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए की गई पिछली सर्वेक्षण कार्रवाई के कारण प्रत्यर्थी संख्या 1 के साथ दुश्मनी है, जिसके कारण रु। 50 करोड़। एफ. आई. आर. में इस तथ्य का खुलासा नहीं किया गया है। शिकायतकर्ता ने प्रत्यर्थी संख्या 1 को इस आशंका के कारण गलत तरीके से फंसाया है कि प्रत्यर्थी संख्या 1 उस पर और उसकी कंपनी पर भारी कर देयता लगाएगा।

ई.

एफ.

iv. एफ. आई. आर. सं. 12/2022 के अवलोकन से पता चलता है कि यह 4 अक्टूबर, 2022 को 9 बजे दर्ज किया गया था: 30 जबकि कथित मांग के कार्य, जाल बिछाना, धारा अंगडिया में धन जमा करना और प्रत्यर्थी संख्या 1 के कार्यालय में छापेमारी 3 अक्टूबर, 2022 को और दिन के समय 4 अक्टूबर, 2022 को हुई। इसके अलावा, शिकायतकर्ता द्वारा प्राथमिकी दर्ज करने से पहले पुलिस अधिकारियों से मिलने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। एफ. आई. आर. दर्ज करने में देरी जो कथित रूप से अवैध संतुष्टि की मांग के 24 घंटे से अधिक समय बाद हुई है, की व्याख्या नहीं की गई है।

जी.

एच.

490

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

v. केवल प्रत्यर्थी संख्या 1 को सी. बी. आई. द्वारा गिरफ्तार करने की मांग की जाती है। धारा अंगडिया फर्म के मालिक या कर्मचारियों को गिरफ्तार नहीं किया गया है और मालव मेहता को

अग्रिम जमानत देने वाले उच्च न्यायालय के आदेश को सीबीआई ने इस अदालत के समक्ष चुनौती नहीं दी है।

vi.सी. बी. आई. ने प्रत्यर्थी संख्या 1 को गिरफ्तार करने के लिए सी. आर. पी. सी. की धारा 41 ए के प्रावधानों का दुरुपयोग किया है।अर्नेश कुमार बनाम बिहार राज्य 5 के मामले में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित प्रावधान और दिशानिर्देशों के अवलोकन से पता चलता है कि धारा 41 ए के तहत नोटिस केवल तभी जारी किया जाएगा जब जांच एजेंसी को किसी व्यक्ति की हिरासत की आवश्यकता नहीं होगी।वर्तमान मामले में, प्रत्यर्थी संख्या 1 के कार्यालय में ए. सी. बी. दल द्वारा की गई छापेमारी के बाद धारा 41 ए के तहत नोटिस जारी किए गए थे, जिस समय तक उन्होंने उसे गिरफ्तार करने का फैसला कर लिया था।

बी.

सी.

vii.इस न्यायालय के तय किए गए कानून के अनुसार, प्रत्यर्थी संख्या 1 को भगोड़ा नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह अपने कानूनी उपायों का लाभ उठा रहा था।हालांकि, इसके बावजूद, जांच एजेंसी ने मीडिया में नोटिस प्रकाशित किए और विभिन्न स्थानों पर प्रत्यर्थी नंबर 1 के नाम, फोटो और पदनाम के साथ 'वांटेड' पोस्टर चिपकाए, जो जांच एजेंसी के दुर्भावनापूर्ण होने का संकेत देते हैं।

डी.

ई.

viii.अग्रिम जमानत दिए जाने के बाद प्रत्यर्थी संख्या 1 के आचरण से उसकी ईमानदारी स्पष्ट होती है।उच्च न्यायालय के निर्देश के अनुसार, प्रत्यर्थी संख्या 1 कम से कम चार मौकों पर, जब भी बुलाया जाए, सी. बी. आई. के समक्ष उपस्थित हुआ।प्रत्यर्थी नंबर 1 ने भी स्वेच्छा से अपनी आवाज़ के नमूने दिए हैं।इस तथ्य को देखते हुए कि प्रत्यर्थी संख्या 1 जांच में सहयोग कर रहा है, हिरासत में पूछताछ की आवश्यकता नहीं है।उच्च न्यायालय ने यह निर्देश देने में गलती की कि अग्रिम जमानत दिए जाने के बावजूद जांच एजेंसी पुलिस रिमांड के लिए सक्षम मजिस्ट्रेट के पास आवेदन करने के लिए स्वतंत्र होगी।आदेश का यह हिस्सा प्रत्यर्थी संख्या 1 के लिए नुकसानदेह था, लेकिन उन्होंने इसका पालन किया और जब सी. बी. आई. ने पुलिस रिमांड के लिए आवेदन किया तो वे न्यायालय के समक्ष पेश हुए।

एफ.

जी.

ix.प्रत्यर्थी नंबर 1 का एक त्रुटिहीन सेवा रिकॉर्ड है जैसा कि सबसे संवेदनशील लोगों में से एक को उनकी पोस्टिंग से स्पष्ट होता है।

एच.

5 (2014) 8 एससीसी 273।

491

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

ए.

विभाग में कार्य। इस तरह की पोस्टिंग केवल साफ छवि वाले वरिष्ठ अधिकारियों को दी जाती है। उनकी सत्यनिष्ठा संदेह से परे है और उनका एक बेदाग पिछला रिकॉर्ड है। प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का कोई मामला नहीं है। x. भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 17 ए, जैसा कि 2018 में संशोधित किया गया था, एक लोक सेवक द्वारा कथित अपराध में एक पुलिस अधिकारी द्वारा किसी भी जांच, जांच या जांच पर रोक लगाने का प्रावधान करती है, जहां कथित अपराध सक्षम प्राधिकारी की पूर्व मंजूरी के बिना, आधिकारिक कार्यों या कर्तव्यों के प्रयोग में लिए गए किसी भी निर्णय या सिफारिश से संबंधित है। इस मामले में जांच एजेंसी ने धारा 17 ए की अनिवार्य प्रक्रिया का पालन नहीं किया है और सक्षम प्राधिकारी की किसी भी पूर्व मंजूरी के बिना शिकायत पर जांच शुरू कर दी है। इन अनिवार्य शर्तों का उल्लंघन प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ शुरू की गई कार्यवाही को दूषित करता है;

बी.

सी.

डी.

xi. इन परिस्थितियों में, उच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 1 को अग्रिम जमानत दे दी है और विवादित आदेश के पैराग्राफ 12 में इसके लिए पर्याप्त तर्क प्रदान किया है।

xii. जमानत रद्द करने से जमानत से इनकार करने की तुलना में पूरी तरह से अलग आधार पर निपटा जाना चाहिए और एक बार जमानत दिए जाने के बाद उसे रद्द करने के लिए 'ठोस और भारी' कारण आवश्यक हैं। रिलायंस को इस संबंध में रखा गया है

ई.

दोलत राम बनाम हरियाणा राज्य **6** जिसमें दो-न्यायाधीश

इस न्यायालय की पीठ ने अभिनिर्धारित किया कि: “4. प्रारंभिक चरण में गैर-जमानती मामले में जमानत की अस्वीकृति और इस तरह से दी गई जमानत को रद्द करने पर विचार किया जाना चाहिए और अलग-अलग आधार पर निपटा जाना चाहिए। पहले से दी गई जमानत को रद्द करने का निर्देश देने वाले आदेश के लिए बहुत ठोस और भारी परिस्थितियां आवश्यक हैं। आम तौर पर, जमानत रद्द करने के आधार, मोटे तौर पर (उदाहरणात्मक और संपूर्ण नहीं) हैं: हस्तक्षेप या

न्याय प्रशासन के उचित पाठ्यक्रम में हस्तक्षेप करने का प्रयास या चोरी या न्याय के उचित पाठ्यक्रम से बचने का प्रयास या रियायत का दुरुपयोग

एफ.

जी.

एच.

6 (1995) 1 एससीसी 349।

492

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

अभियुक्त को किसी भी तरह से दिया जाता है। अभियुक्त के फरार होने की संभावना के अभिलेख पर रखी गई सामग्री के आधार पर न्यायालय की संतुष्टि जमानत रद्द करने को उचित ठहराने का एक और कारण है। हालांकि, एक बार दी गई जमानत को इस बात पर विचार किए बिना यांत्रिक तरीके से रद्द नहीं किया जाना चाहिए कि क्या किसी भी पर्यवेक्षी परिस्थितियों ने मुकदमे के दौरान जमानत की रियायत का आनंद लेते हुए आरोपी को अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने की अनुमति देने के लिए इसे निष्पक्ष सुनवाई के लिए अनुकूल नहीं बनाया है।”

बी.

xiii.सी. बी. आई. या शिकायतकर्ता द्वारा जमानत रद्द करने के लिए कोई पर्यवेक्षी परिस्थितियों का उल्लेख नहीं किया गया है।

सी.

विश्लेषण

22. अग्रिम जमानत देने पर कानून का सारांश इस प्रकार दिया गया है -

इस न्यायालय ने सिद्धराम सतलिंगप्पा मेत्रे बनाम महाराष्ट्र राज्य 7,

संविधान पीठ द्वारा विकसित मापदंडों पर उचित विचार-विमर्श के बाद

गुरबख्श सिंह सिबिया बनाम पंजाब राज्य 8. इस न्यायालय ने इस प्रकार निर्णय दिया:

डी.

“112. अग्रिम जमानत से निपटने के दौरान निम्नलिखित कारकों और मापदंडों को ध्यान में रखा जा सकता है:

((i) गिरफ्तारी से पहले आरोप की प्रकृति और गंभीरता और अभियुक्त की सटीक भूमिका को ठीक से समझा जाना चाहिए; (ii) आवेदक के पूर्ववृत्त को इस तथ्य सहित कि क्या अभियुक्त ने पहले किसी संज्ञेय अपराध के संबंध में न्यायालय द्वारा दोषी ठहराए जाने पर कारावास का सामना किया है; (iii) आवेदक के न्याय से भागने की संभावना;

ई.

((iv) अभियुक्त के समान या अन्य अपराधों को दोहराने की संभावना;

एफ.

(v) जहां आरोप केवल आवेदक को गिरफ्तार करके उसे घायल करने या अपमानित करने के उद्देश्य से लगाए गए हैं; (vi) अग्रिम जमानत देने का प्रभाव विशेष रूप से बहुत बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करने वाले मामलों में;

जी.

(vii) अदालतों को अभियुक्त के खिलाफ पूरी उपलब्ध सामग्री का बहुत सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना चाहिए। न्यायालय को भी स्पष्ट रूप से समझना चाहिए

7 (2011) 1 एससीसी 694। 8 (1980) 2 एससीसी 565।

एच.

493

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

ए.

मामले में अभियुक्त की सटीक भूमिका। जिन मामलों में अभियुक्त को न्यायालय संहिता, 1860 की धारा 34 और 149 की मदद से फंसाया गया है, अदालत को और भी अधिक सावधानी और सावधानी के साथ विचार करना चाहिए क्योंकि मामलों में अति-प्रभाव सामान्य ज्ञान और चिंता का विषय है।

(viii) अग्रिम जमानत देने की प्रार्थना पर विचार करते समय, दो कारकों के बीच एक संतुलन बनाया जाना चाहिए, अर्थात्, स्वतंत्र, निष्पक्ष और पूर्ण जांच पर कोई पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए और आरोपी के उत्पीड़न, अपमान और अन्यायपूर्ण हिरासत की रोकथाम होनी चाहिए।

बी.

(ix) न्यायालय गवाह के साथ छेड़छाड़ की उचित आशंका या शिकायतकर्ता को खतरे की आशंका पर विचार करे; (x) अभियोजन में तुच्छता पर हमेशा विचार किया जाना चाहिए और यह केवल वास्तविकता का तत्व है जिस पर जमानत देने के मामले में विचार किया जाना चाहिए

और अभियोजन की वास्तविकता के बारे में कुछ संदेह होने की स्थिति में, घटनाओं के सामान्य क्रम में, अभियुक्त जमानत के आदेश का हकदार है।”

सी.

डी.

**23. सुशीला अग्रवाल बनाम राज्य (दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) 9 में,**

संविधान पीठ ने दोहराया कि अग्रिम जमानत के लिए आवेदनों पर निर्णय लेते समय, अदालतों को अपराधों की प्रकृति और गंभीरता, आवेदक की भूमिका और मामले के तथ्यों जैसे कारकों द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए।

ई.

24. समय-परीक्षित सिद्धांत यह है कि अग्रिम जमानत देने या अस्वीकार करने के लिए कोई स्ट्रैटजैकेट सूत्र लागू नहीं किया जा सकता है। न्यायालय का न्यायिक विवेकाधिकार विभिन्न प्रासंगिक कारकों द्वारा निर्देशित होगा और यह काफी हद तक प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। न्यायालय को संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता और एक निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच की आवश्यकता के बीच एक नाजुक संतुलन बनाना चाहिए, जिसे इसके तार्किक निष्कर्ष पर ले जाया जाना चाहिए। गिरफ्तारी के विनाशकारी और अपरिवर्तनीय सामाजिक कलंक, अपमान, अपमान, मानसिक पीड़ा और अन्य भयानक परिणाम होते हैं। इसके बावजूद, जब न्यायालय, जांच एजेंसी द्वारा एकत्र की गई भौतिक जानकारी पर विचार करने पर, प्रथम दृष्टया संतुष्ट होता है कि आरोपी के खिलाफ केवल संदेह की सुई से अधिक कुछ है, तो वह जांच को खतरे में नहीं डाल सकता है, खासकर जब आरोप गंभीर प्रकृति के हों।

एफ.

जी.

9 (2020) 5 एससीसी 1.

एच.

494

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

25. इन सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए हम प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों का मूल्यांकन करने के लिए आगे बढ़ते हैं। शुरुआत में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उच्च न्यायालय यह देखने में एक

तथ्यात्मक त्रुटि में पड़ गया कि 3 और 4 अक्टूबर, 2022 को कथित रूप से हुए अपराध के लिए 12 अक्टूबर, 2022 को प्राथमिकी दर्ज की गई थी। ए. सी. बी. द्वारा प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ 4 अक्टूबर, 2022 को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 7, 13 (1) और 13 (2) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी और सी. बी. आई. द्वारा 12 अक्टूबर, 2022 को फिर से दर्ज की गई थी।

बी.

26. इसके अलावा, उच्च न्यायालय द्वारा प्रत्यर्थी संख्या 1 को अग्रिम जमानत देने के लिए सौंपा गया प्राथमिक आधार यह है कि रिश्त की राशि की स्वीकृति के बारे में संदेह था क्योंकि धारा अंगडिया फर्म के रिकॉर्ड प्रस्तुत नहीं किए गए थे जो प्रत्यर्थी संख्या 1 और फर्म के बीच कोई संबंध स्थापित करते थे।

सी.

27. सी. बी. आई. ने केस डायरी पेश की है जिसमें धारा अंगडिया फर्म को संभालने वाले स्मित ठक्कर द्वारा दिया गया बयान है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि मालव मेहता वर्धमान खाते के मालिक थे और उन्होंने उन्हें सूचित किया था कि 4 अक्टूबर, 2022 को उनके खाते में 30 लाख रुपये जमा किए जाएंगे, जो बदले में किसी और को भेजे जाने थे। शिकायतकर्ता और प्रत्यर्थी संख्या 1 के बीच बातचीत की कथित रिकॉर्डिंग, जिसमें प्रत्यर्थी संख्या 1 ने वर्धमान खाते में राशि जमा करने के बाद शिकायतकर्ता को धन्यवाद दिया, धारा अंगडिया फर्म में अवैध संतुष्टि की जमा राशि के साथ प्रत्यर्थी संख्या 1 को जोड़ने के लिए एक उचित कड़ी है, जिससे प्रथम दृष्टया इसकी स्वीकृति दिखाई देती है।

डी.

ई.

28. एफ. आई. आर. दर्ज करने में 24 घंटे से अधिक की देरी की कथित विसंगति के संबंध में, हम अपने सामने पेश की गई सामग्री से पाते हैं कि शिकायतकर्ता ने 7 बजे शिकायत सुनाना शुरू कर दिया था: 15 घंटे और यह 08 पर समाप्त हुआ: 00 4 अक्टूबर, 2022 को घंटे। केस डायरी में संलग्न पंचनामा, ए. सी. बी. द्वारा बिछाए गए जाल का विवरण प्रदान करता है और उस दिन ए. सी. बी. दल की सभी गतिविधियों को सूचीबद्ध करता है, जिससे जांच एजेंसियों की ओर से दुर्भावना के किसी भी संदेह को दूर किया जा सकता है। 29. हमने आयकर के सहायक आयुक्त श्री विवेक जौहरी के बयान को भी देखा है, जिन्होंने कहा है कि प्रत्यर्थी नंबर 1 ने कार्यालय से निकलने से पहले अपना मोबाइल फोन उन्हें सौंप दिया, जिसे श्री जौहरी ने बाद में फेंक दिया।

एफ.

जी.

30. जिस तरह से प्रत्यर्थी संख्या 1 ने अपने सहयोगियों की मदद से जबरन अपनी गिरफ्तारी से बचा लिया और सबूतों को नष्ट कर दिया, वह है ए

एच.

495

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।] ए.

इस स्तर पर उसकी संलिप्तता का संकेत देने के लिए एक मजबूत परिस्थिति, हालांकि जांच पूरी होने पर ही एक स्पष्ट तस्वीर सामने आएगी।

31. उच्च न्यायालय द्वारा कथित अपराध की प्रकृति और गंभीरता को ध्यान में रखा जाना चाहिए था। भ्रष्टाचार हमारे समाज के लिए एक गंभीर खतरा है और इससे सख्ती से निपटा जाना चाहिए। इससे न केवल सरकारी खजाने को भारी नुकसान होता है, बल्कि सुशासन को भी कुचला जाता है। आम आदमी समाज कल्याण योजनाओं के तहत मिलने वाले लाभों से वंचित है और सबसे ज्यादा प्रभावित है। यह उचित रूप से कहा जाता है, "भ्रष्टाचार एक ऐसा पेड़ है जिसकी शाखाएँ अथाह लंबाई की होती हैं; वे हर जगह फैलती हैं; और वहाँ से गिरने वाली ओस ने कुछ कुर्सियों और सत्ता के मल को संक्रमित कर दिया।" इसलिए, अतिरिक्त जागरूक होने की आवश्यकता है। 32. अभिलेख पर रखी गई सामग्री से, ऐसा लगता है कि प्रथम दृष्टया, प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ आरोपों को इस स्तर पर हल्के में नहीं लिया जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक सुव्यवस्थित सिंडिकेट है जिसमें आयकर विभाग के अधिकारी और अधिकारी, व्यवसायी और हवाला व्यापारी शामिल हैं, जो मिलकर काम कर रहे हैं। इस तरह की सांठगांठ का पता एक अप्रभावित और निर्बाध जांच के माध्यम से लगाया जाना चाहिए।

बी.

सी.

डी.

33. यह तर्क कि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17 ए के तहत अनिवार्य जांच की पूर्व मंजूरी प्राप्त नहीं की गई है और इस प्रकार, प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ शुरू की गई कार्यवाही दूषित है, का कोई कानूनी या तथ्यात्मक आधार नहीं है। धारा 17 ए केवल इस बात पर विचार करती है कि पुलिस अधिकारी किसी लोक सेवक द्वारा किए गए किसी भी अपराध की कोई जांच, जांच या जांच नहीं करेंगे, जहां कथित अपराध सक्षम प्राधिकारी की पूर्व मंजूरी के बिना आधिकारिक कार्यों या कर्तव्यों के निर्वहन में की गई किसी भी सिफारिश या निर्णय से संबंधित है। धारा के पहले परंतुक में कहा गया है कि अनुचित लाभ स्वीकार करने के आरोप में मौके पर ही व्यक्ति की गिरफ्तारी से जुड़े मामलों में इस तरह की मंजूरी आवश्यक नहीं है। 34. जैसा कि देखा जा सकता है, धारा 17 ए का पहला परंतुक उन मामलों को संदर्भित करता है जिनमें एक

लोक सेवक पर अनुचित लाभ या उसके प्रयास की स्वीकृति का आरोप लगाया जाता है। ट्रैप मामले में ऐसे अधिकारी की जांच के लिए पूर्व अनुमोदन या मंजूरी से ट्रैप और जांच के उद्देश्य को विफल करने की संभावना है, जो कि विधायिका का अंतर्निहित इरादा नहीं है। प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ जांच, रिश्वत मांगने का आरोपी होने के कारण, केंद्र सरकार की किसी पूर्व मंजूरी की आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा, प्रत्यर्थी संख्या 1 के खिलाफ आरोप उसके द्वारा अपनी अर्ध-न्यायिक या प्रशासनिक क्षमता में की गई किसी भी सिफारिश या निर्णय के इर्द-गिर्द नहीं घूमता है।

ई.

एफ.

जी.

एच.

496

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 3 एस सी आर।

35. यह सच है कि जमानत रद्द करना केवल ठोस और भारी कारणों से किया जाना चाहिए। फिर भी, जमानत देने वाले अनुचित आदेश को दरकिनार करना जमानत रद्द करने से अलग है। यह न्यायालय किसी अभियुक्त को जमानत देते समय उच्च न्यायालय द्वारा प्रयोग किए गए न्यायिक विवेकाधिकार में हमेशा हस्तक्षेप नहीं करेगा। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उच्च न्यायालय समय-समय पर निर्णयों की एक श्रृंखला में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित बुनियादी सिद्धांतों के अनुरूप विवेकपूर्ण, सावधानीपूर्वक और सख्ती से अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करे।

बी.

**36.** सुशीला अग्रवाल (ऊपर) में संविधान पीठ ने कहा कि:

सी.

“ 92.11. जमानत देने वाले आदेश की शुद्धता पर राज्य या जांच एजेंसी के कहने पर अपीलीय या उच्च न्यायालय द्वारा विचार किया जा सकता है, और इस आधार पर अपास्त करना जा सकता है कि इसे देने वाले न्यायालय ने भौतिक तथ्यों या महत्वपूर्ण परिस्थितियों पर विचार नहीं किया था।”

सारांश

डी.

37. आरोपों की प्रकृति, अभिलेख पर सामग्री और अग्रिम जमानत देने पर स्थापित कानूनी सिद्धांतों पर विचार करने के बाद, हमारा विचार है कि, चाहे वह कितना भी कठिन या कठोर क्यों न हो, उच्च न्यायालय को दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के तहत अपनी विवेकाधीन अधिकारिता का प्रयोग करते हुए प्रत्यर्थी संख्या 1 को गिरफ्तारी के खिलाफ संरक्षण देने से बचना चाहिए था।

ई.

38. यह मानते हुए कि प्रत्यर्थी संख्या 1 को कुछ वैध आशंकाएं थीं कि ए. सी. बी. (राज्य पुलिस) की कार्रवाई बाहरी कारणों से की गई थी, वह अब जांच सी. बी. आई. को हस्तांतरित किए जाने के बाद ऐसा नहीं कह सकते। हम केंद्रीय एजेंसी के खिलाफ व्यक्तिगत प्रतिशोध, उत्पीड़न, पूर्वाग्रह या गुप्त उद्देश्य का कोई आरोप नहीं पाते हैं। किसी भी मामले में, सी. बी. आई. से उम्मीद की जाती है कि वह हिरासत में पूछताछ के अधीन एक आरोपी के अधिकारों का ईमानदारी से पालन करते हुए एक स्वतंत्र, निष्पक्ष और निष्पक्ष जांच करे।

एफ.

जी.

39. तदनुसार, अपीलों की अनुमति दी जाती है। 19 दिसंबर, 2022 के उच्च न्यायालय के विवादित निर्णय और आदेश को अपास्त करना दिया गया है और प्रत्यर्थी संख्या 1 की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी गई है। इसके परिणामस्वरूप, विशेष न्यायाधीश, सी. बी. आई. न्यायालय संख्या 3 द्वारा पारित 30 दिसंबर, 2022 के आदेश को भी आंशिक रूप से सी. बी. आई. के रिमांड के आवेदन की अनुमति देते हुए अपास्त करना दिया गया है।

एच.

497

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम संतोष कर्णानी और ए. एन. आर. [सूर्या कान्ट, जे।]

ए.

40. हम स्पष्ट करते हैं कि इस न्यायालय ने गिरफ्तारी से पहले जमानत देने से इनकार करने या देने के सीमित उद्देश्य के लिए आरोपों के गुण-दोष पर केवल प्रथम दृष्टया राय व्यक्त की है। यदि प्रत्यर्थी संख्या 1 किसी उपयुक्त न्यायालय के समक्ष नियमित जमानत देने के लिए आवेदन करता है, तो उस पर अपने गुण-दोष के आधार पर और कानून के अनुसार विचार किया जाएगा, जो यहाँ ऊपर की गई टिप्पणियों से अप्रभावित होगा।

बी.

41. अपीलों का निपटारा उपरोक्त शर्तों में किया जाता है।

42. लंबित आवेदन (ओं), यदि कोई हों, तो उनका भी निपटारा कर दिया जाता है।

सी.

अंकित ज्ञान

अपीलों का निपटारा किया गया।

(सहायक: महेंद्र यादव, एलसीआरए)

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.